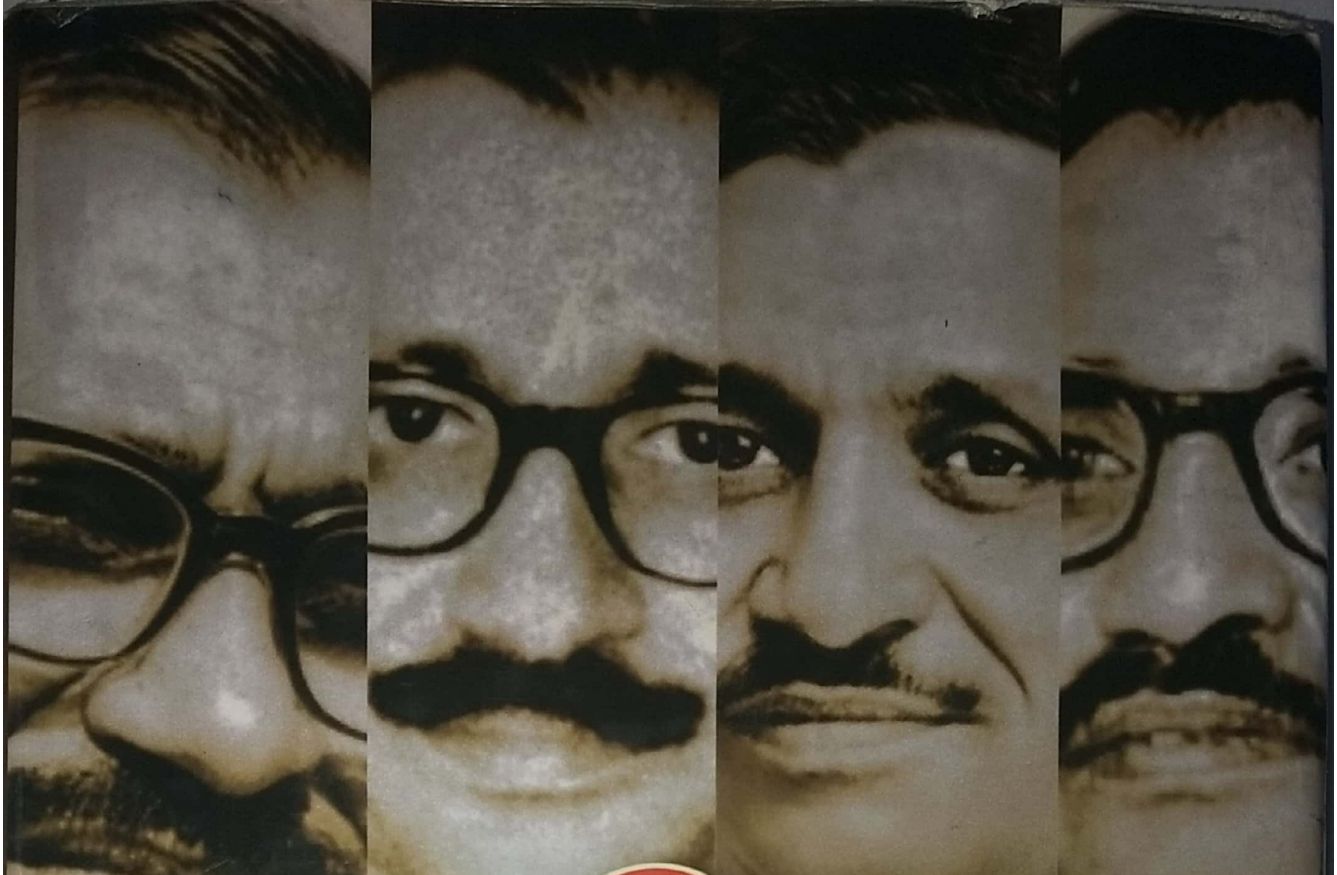

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय

व्यक्ति और वाङ्मय

[द्वितीय खण्ड]

सम्पादक

डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय'

डॉ. इन्द्र सिंह ठाकुर

Scanned with CamScanner

श्रद्धांजलि गीतिका

मानव-हितों के यक्ष! मातृभूमि-सुत ललाम!
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

नगला में जन्म ले सुभग सिंगार बन गये
जन-जीवनों के तुम गले के हार बन गये
निबलों, निराश्रितों के, निरीहों के पुण्यधाम।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

पावन पिता की प्रीति प्रेरणा जगा गयी
माँ रामप्यारी राम-दुलारा बना गयी
हे सत्यमूर्ति! सत्य धर्म-अर्थ! सत्यकाम।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

संस्कृति के पथ के शूल सदा छाँटते रहे
शैशव से अनाथों को सुधा बाँटते रहे
करते रहे हो साधना अनिन्द्य आठों याम।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

एकात्मता के यज्ञ की ऋचाएँ रची हैं
पार्थों की जन्मदात्री पृथाएँ रची हैं
चिन्तन-चरित्र-चिति के रथ के सारथी अनाम।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

तुम राजनीति में शुचा के पक्षधर रहे
समरसता की समत्व की प्रभा प्रखर रहे
जिनके समक्ष गलते पिघलते रहे विराम।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

संवेदना के साथ शूरता दो, शक्ति दो
अनुगामियों को जनता जनार्दन की भक्ति दो
करते [illegible] प्रार्थना 'हों स्वप्न सब सकाम'।
दीनों के हे दयाल! तुम्हें कोटिशः प्रणाम॥

- आचार्य देवेन्द्र 'देव'

साहित्य भण्डार

0, चाहचन्द (ज़ीरो रोड),
यागराज-211003 (उत्तरप्रदेश)
रभाष : 09335155792, 09415214878
-मेल : sahityabhandar50@gmail.com
सबुक : sahityabhandarallahabad

ISBN 978-81-7779-636-0

9 788177 796360